B.Ed. 2nd Year
Session – 2018-2020
Subject – Pedagogy of History
Course – 7 (A) /Unit – 4(d)
Topic – निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण
(Diagnostic and Remedial Teaching)
Lecture No. - 64

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

Continued from previous lecture....

नैदानिक परीक्षण के उद्देश्य
(Aims of Diagnostic Test)

नैदानिक परीक्षण के निम्न उद्देश्य हैं -

1. **विद्यार्थियों की विषय संबंधी कमजोरी का पता लगाना** - इस प्रकार के परीक्षण का मुख्य उद्देश्य छात्रों को अधिगम प्राप्त करने में हो रही कठिनाई का पता लगाना है।

2. **अधिगम को बेहतर बनाने हेतु** - इस प्रकार के परीक्षण द्वारा छात्रों की कमजोरियों एवं कमियों का पता लगाकर उनके अधिगम अनुभवों को बेहतर बनाया जा सकता है।

3. **विषय में रूचि विकसित करने हेतु** - यदि छात्रों की कमियों का पता लगाकर उन कमियों का दूर किया जाए तो इसके फलस्वरूप विषय छात्रों के लिए सरल एवं रूचिकर हो जाता है।

4. **उच्च प्राप्तांकों की प्राप्ति में सहायक** - जब छात्रों को हो रही कठिनाइयों का निवारण हो जाता है तो वे उस विषय -वस्तु को पढ़ने एवं समझने में रूचि लेने लगते हैं। परिणामस्वरूप उसे परीक्षाओं में उसे उच्च प्राप्तांक प्राप्त करने में उसे सफलता मिलती है।

5. **आत्मविश्वास एवं मनोबल बढ़ाने में सहायक** - यदि विषय-वस्तु को समझने में असमर्थ होता है तो विषय उसे नीरस एवं अरूचिकर प्रतीत होता है। इसके विपरीत

विषय में हो रही कठिनाइयों के निवारण के परिणामस्वरूप जब विषय उसे समझ आने लगती है तो उसका मनोबल एवं आत्मविश्वास बढ़ने लगता है।

अंकन प्रक्रिया
(Evaluation)

परीक्षण के उपरान्त छात्रों के द्वारा की गई अशुद्धियों को अंकित किया जाता है। इस बात का ध्यान रखा जाता है कि विद्यार्थी के कार्य की गुणात्मक व्याख्या उसकी संख्यात्मक उपलब्धि से अधिक महत्वपूर्ण है , क्योंकि इसके आधार पर ही विद्यार्थी को हो रही कठिनाइयों के मूल कारणों का पता लगाया जा सकता है।

कारण जानने के लिए परीक्षण परिणामों का विश्लेषण
(Analysis of Results to Know the Causes)

परीक्षण के अंकन से प्राप्त अंको का विश्लेषण किया जाना आवश्यक है। यही हमे सही प्रकार के उपचारात्मक शिक्षण का मार्ग दिखाता है। छात्रों की कठिनाइयों अथवा कमजोरियों के मूख्य कारक निम्नलिखित हैं -

1. विद्यालय अथवा घर का वातावरण
2. पारिवारिक समस्या
3. स्वास्थ्य संबंधी समस्या
4. अभिप्रेरणा की कमी
5. विषय की कठिन प्रकृति
6. विषय-अध्यापक का कटु व्यवहार
7. अनुपयुक्त अध्यापन विधि

उपरोक्त सभी कारक विषय के प्रति अरूचि उत्पन्न करते हैं। इससे छात्रों में विषय के प्रति नकारात्मक प्रकृति विकसित होती है। ऐसे विद्यार्थियों के लिए उपचारात्मक शिक्षण की अधिक आवश्यकता होती है।

To be continued.....